Indicators of Development

विकास वह प्रक्रिया है, जिसके परिणामस्वरूप किसी भी देश में समस्त उत्पादित संसाधनों का विदोहन होता है। राष्ट्रीय आय व प्रति व्यक्ति आय में निरन्तर एवं दीर्घकालिक वृद्धि होती है तथा जनता के जीवन स्तर एवं सामाजिक कल्याण का सूचकांक बढ़ता है।

जब कोई देश विकास करता है तो उसका असर चतुर्दिक परिलक्षित होने लगता है जिसका माप विकास के सूचक के द्वारा ही संभव होता है। विकास के सूचकों में उत्पादन के साथ-साथ वितरण को भी महत्व दिया जाता है। विकास के सूचक को निम्न बिन्दु से जाना जा सकता है।

(i) राष्ट्रीय आय में वृद्धि
(ii) प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि
(iii) पूँजी निर्माण दर
(iv) आर्थिक कल्याण में वृद्धि
(v) वास्तविक जनसंख्या वृद्धि दर
(vi) रहन-सहन का स्तर
(vii) व्यावसायिक संरचनांक
(viii) मानव विकास सूचकांक
(ix) ऊर्जा उपभोग का स्तर
(x) नगरीकरण का स्तर
(xi) प्रति 100 K.m² क्षेत्र पर सड़क मार्ग की लम्बाई

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

1. राष्ट्रीय आय में वृद्धि :- यदि किसी राष्ट्र के राष्ट्रीय आय में वृद्धि हो रही है, तो इसका अर्थ यह है, कि राष्ट्र विकास कर रहा है। वृद्धि का तात्पर्य निरन्तर वृद्धि से है। क्योंकि इससे राष्ट्र के आर्थिक विकास का ब्यौरेवार जानकारी मिलती है। सकल राष्ट्रीय उत्पादन में से पूंजीगत वस्तुओं की घिसावट अथवा मूल्य ह्रास को घटा देने से शुद्ध राष्ट्रीय आय की प्राप्ति होती है

* सकल राष्ट्रीय उत्पादन – पूंजीगत वस्तु की घिसावट / मूल्य ह्रास = राष्ट्रीय आय

(ii) प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि :- प्रति व्यक्ति आय, शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद को जनसंख्या के आकार से विभाजित करने पर प्राप्त होता है। प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि को आर्थिक कल्याण का श्रेष्ठ सूचक माना जाता है विकसित देशों में प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि यह संकेत करती है कि इन देशों में राष्ट्रीय आय में वृद्धि दर जनसंख्या में वृद्धि दर से अधिक रही है

(iii) पूंजी निर्माण दर :- पूंजी निर्माण दर को विकास का प्रमुख सूचक माना जाता है। यदि पूंजी निर्माण दर उच्च है तो देश विकसित होगा। इसके विपरित कम पूंजी निवेश वाले देश अविकसित होंगे। विकासशील देश में पूंजी निर्माण की दर निम्न है, अतः वहाँ की अर्थव्यवस्था पिछड़ी है। जबकि विकसित देशों में बचत की दर अधिक है अतः विनियोग के लिए पूंजी अधिक है, जिस कारण ये देश उन्नत विकास प्रौद्योगिकी को आत्मसात किये हुए हैं

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

(iv) आर्थिक कल्याण में वृद्धि ;- आर्थिक प्रगति मूलतः आर्थिक कल्याण के उच्च स्तर से संबंधित है, जो कि देश की सम्पूर्ण जनसंख्या में कमोबेश समान रूप में बंटी हुई हो। आर्थिक विकास का अन्तिम उद्देश्य लोगों के आर्थिक कल्याण में वृद्धि करना है। इस प्रकार ऐसी प्रक्रिया को विकास का आधार माना जाता है जिससे प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हो।

(v) वास्तविक जनसंख्या वृद्धि दर ;- इसका आशय जनसंख्या का प्राकृतिक वृद्धि दर से है, जो कि अनुकूलतम हो अर्थात् जनसंख्या वृद्धि संसाधन के अनुपात में समभाव्य हो। इससे किसी भी देश के विकास की दर का गन्वेषणा तथा मूल्यांकन एक सिम्बेंस के अनुरूप हो सकता है।

(vi) रहन - सहन का स्तर ;- किसी भी देश के व्यक्तियों के रहन - सहन का स्तर उस देश के विकास के स्तर को निर्धारित करती है अर्थात् जिस देश के निवासियों का रहन - सहन का स्तर उच्च है तो उस देश के विकास का स्तर भी उच्च होगा। जैसे ;- विकसित देश के जनताओं का रहन - सहन का स्तर उच्च है जबकि पिछड़े देश की जनताओं का रहन - सहन का स्तर निम्न।

(vii) व्यावसायिक सूचकांक ;- व्यावसायिक सूचकांक / संरचना को विकास का सूचक माना जाता है। व्यावसायिक संरचना से तात्पर्य कार्यशील जनसंख्या का विभिन्न कार्यों में विभाजन से है। आर्थिक विकास तथा व्यावसायिक संरचना में घनिष्ठ संबंध होता है। आर्थिक क्रियाओं के आधार पर इसे 5 वर्गों में विभाजित किया जाता है। जैसे - जैसे किसी देश का आर्थिक विकास होता

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

जाता है वैसे-वैसे प्राथमिक क्षेत्र में लगे व्यक्ति का अनुपात कम होता जाता है एवं द्वितीय से तृतीय, चतुर्थ तथा पंचमक क्रियाओं में निरन्तर स्थानान्तरण होता रहता है।

(viii) मानव विकास सूचकांक :- मानव विकास सूचकांक एक बहुआयामी सम्पूर्ण राष्ट्रीय फलक पर फैली गुणात्मक परिवर्तन को अपने में समाहित करने वाली बहुस्तरीय प्रक्रिया है, जिसका मूल्यांकन विश्व स्तर पर किया जाता है। इसके निर्धारण में 3 चरों की सहायता ली जाती है :-

(I). जीवन प्रत्याशा

(II). शिक्षा प्राप्ति का सूचकांक

(III). सकल घरेलु उत्पाद

उपर्युक्त तीनों चर समूहों के सूचकांक का योग औसत मानव सूचकांक प्रदान करता है। पुनः सूचकांक के आधार पर राष्ट्र को एक तरह से अवरोही क्रम में रखा जाता है, जिससे उसके विकास के स्तर का निर्धारण होता है।

(ix) ऊर्जा उपभोग का स्तर :- किसी भी देश के विकास सूचक में ऊर्जा के उपभोग स्तर का बहुमूल्य योगदान होता है क्योंकि ऊर्जा के द्वारा ही औद्योगिक संस्थान, कृषि कार्य, परिवहन कार्य, मनोरंजन के साधनों की पूर्ति होती है। जो देश जितना विकसित होता है, उसी के अनुपात में ऊर्जा की खपत भी उतनी अधिक होती है। जैसे - U.S.A विश्व में सर्वाधिक ऊर्जा का खपत करता है, जो उसके विकसित होने का प्रमाण है लेकिन अफ्रीका के बुरकीना फासो, चाड आदि में ऊर्जा के

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

उपभोग का स्तर निम्न है, उसी अनुपात में वह विश्व के पिछड़े क्षेत्र में शुमार किया जाता है।

(४) नगरीकरण का स्तर :- विकास के प्रमुख सूचक में नगरीकरण को रखा जाता है। जो देश जिस विकास प्रावधिकी का होता है, वहाँ के नगर का स्तर भी उसी तरह का होता है, जिसे निम्न मॉडल के द्वारा परिलक्षित किया जा सकता है :-

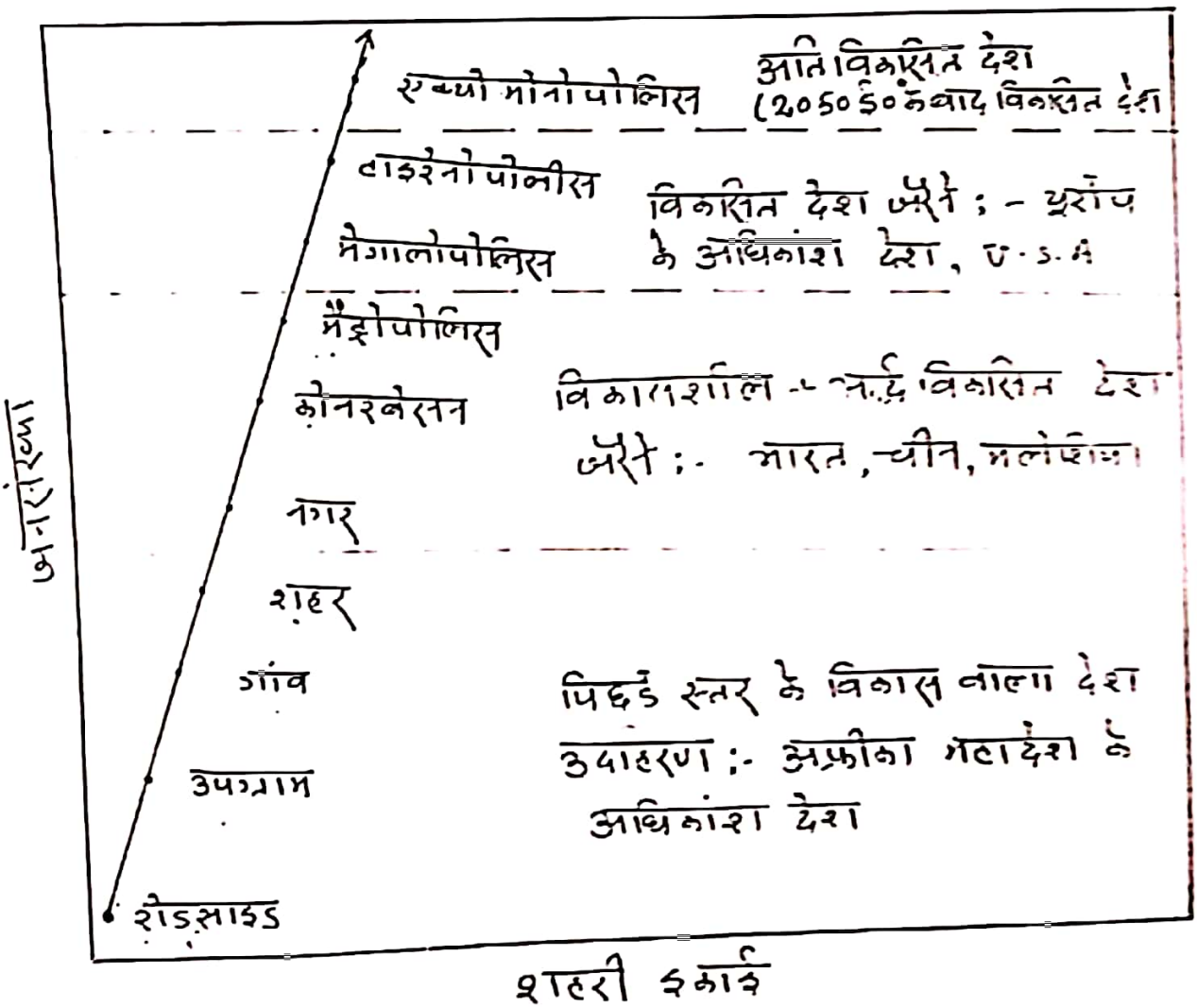

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

(xi). प्रति 100 K·m^2 क्षेत्र पर सड़क मार्ग की लम्बाई :-

सड़क विकास का पथ प्रदर्शक होता है। किसी भी देश के अर्थव्यवस्था की रीढ़ सड़क ही होती है। सड़क के द्वारा ही लोगों, वस्तुओं तथा अन्य विकास के अवयवों का अभिगम्यता और सुगम्यता उपलब्ध होती है। किसी भी देश या क्षेत्र का तब तक विकास संभव नहीं होता जब तक उसके पास अच्छा विस्तृत सड़क नहीं हो। अर्थात् सड़क विकास की गति के तीव्रता लाने में सहायक होती है। जिसका निर्धारण प्रति 100 K·m^2 क्षेत्र पर सड़क मार्ग की लम्बाई द्वारा तय होता है।

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner